International Journal of Recent Research and Review, Vol. XVI, Issue 2, June 2023
ISSN 2277 – 8322

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिता

शिल्पा जैन[1], डॉ. वेद प्रकाश शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, [2]प्रोफेसर शिक्षा विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय (1916–1968) एक प्रमुख भारतीय विचारक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार और राजनीति शास्त्री थे जिन्होंने भारतीय राजनीतिक और सामाजिक चिंतन पर अमिट छाप छोड़ी। उनका जीवन और कार्य समकालीन भारतीय राजनीति और सामाजिक दर्शन को प्रभावित करते हैं, खासकर उनकी 'एकात्म मानववाद' की अवधारण के माध्यम से।

25 सितम्बर, 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नंगला चंद्रभान गांव में जन्म उपाध्याय का प्रारंभिक जीवन व्यक्तिगत त्रासदी और शैक्षणिक उत्कृष्टता से भरा रहा। कम उम्र में अनाथ होने के कारण उनका पालन–पोषण उनके मामा ने किया। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उपाध्याय ने अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासिल की और अपने पूरे शैक्षणिक जीवन में लगातार अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

उपाध्याय की औपचारिक शिक्षा 1939 में सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर से बी.ए. और 1941 में प्रयाग विश्वविद्यालय से वीटी (बैचलर ऑफ टीचिंग) की डिग्री के साथ पूरी हुई। उनकी शैक्षणिक योग्यता उनके सिविल सेवाओं के लिए चयन में स्पष्ट थी, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया और इसके बजाय अपना जीवन सामाजिक और राजनीतिक कारणों के लिए समर्पित करने का विकल्प चुना।

1942 में उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए जो एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन है, जिसने राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता की शुरुआत की। आर.एस.एस. के साथ उनके जुड़ाव ने उनके दार्शनिक और राजनीतिक सोच को गहराई से प्रभावित किया जिसने भारत के भविष्य के लिए उनके दृष्टिकोण को आकार दिया।

उपाध्याय के राजनीतिक जीवन में 1951 में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया जब वे भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक बन गए, जो वर्तमान भारतीय जनता पार्टी का पूर्ववर्ती है। उन्होंने 1951 से 1867 तक 15 वर्षों तक पार्टी के महासचिव के रूप में कार्य किया और इसकी विचारधारा और संगठनात्मक संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उपाध्याय के दार्शनिक योगदान की आधारशिला उनकी "एकात्म मानववाद" की अवधारणा है, जिसे उन्होंने 1964 में व्याख्यानों की एक श्रृंखला में व्यक्त किया और बाद में 1965 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। इस दर्शन ने भारत के लिए एक स्वदेशी राजनीतिक आर्थिक मॉडल पेश करने की कोशिश की, जिसमें पश्चिमी पूंजीवादी व्यक्तिवाद और मार्क्सवादी समाजवाद दोनों को खारिज कर दिया गया।

एकात्म मानववाद मानव विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देता है, जिसमें मानव अस्तित्व के भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयामों पर विचार किया जाता है। उपाध्याय ने तर्क दिया कि सामाजिक और राजनीतिक प्रणालियों का

अंतिम उद्देश्य व्यक्ति और समाज दोनों का एकीकृत विकास होना चाहिए। यह दर्शन पारंपरिक भारतीय विचारों को आधुनिक राजनीतिक और आर्थिक विचारों के साथ संश्लेषित करने का प्रयास करता है, जो पूंजीवाद और साम्यवाद से अलग एक "तीसरा रास्ता" प्रस्तावित करता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक दर्शन उनकी एकात्म मानववाद की अवधारणा में गहराई से निहित है, जो मानव विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है जो भौतिक प्रगति को आध्यात्मिक और नैतिक विकास के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। यह दर्शन, जो उनके मौलिक कार्य 'एकात्म मानववाद' में व्यक्त किया गया है, शिक्षा पर उनके विचारों के लिए आधार प्रदान करता है।

एकात्म मानववाद का मानना है कि मनुष्य केवल भौतिक इकाई नहीं है, बल्कि उसके पास बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्म्कि आयाम है, जिनका सामंजस्य के साथ पोषण किया जाना चाहिए। शिक्षा के संदर्भ में, इसका अर्थ एक ऐसा दृष्टिकोण जो केवल ज्ञान या कौशल के संचय से परे है, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के संपूर्ण विकास पर केंद्रित है जो बिना शिक्षा के नहीं हो सकता है।

उपाध्याय के अनुसार सर्वांगीण व्यक्ति तैयार करना होना चाहिए जो न केवल अपने चुने हुए क्षेत्रों में सक्षम हों बल्कि उनमें मजबूत नैतिक चरित्र और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी हो।

व्यवहार में, एकात्म मानववाद पर आधारित एक शैक्षिक प्रणाली न केवल अकादमिक उत्कृष्टता पर बल्कि चरित्र विकास, शारीरिक फिटनेस, सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक सेवा पर भी जोर देगी। उपाध्याय द्वारा परिकल्पित शिक्षा के लिए यह बहुआयामी दृष्टिकोण, समकालीन समाज के सामने आने वाली जटिल चुनौतियों, जिसमें बेरोजगारी और सामाजिक विघटन शामिल है, को संबोधित करने की क्षमता रखता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक दर्शन का एक प्रमुख पहलू पारंपरिक भारतीय मूल्यों को आधुनिक कौशल और ज्ञान के साथ संतुलित करने पर जोर देता है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली बनाने का प्रयास करता है जो भारत की सांस्कृतिक विरासत में निहित हो और तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था की मांगों को पूरा करने में सक्षम हो।

उपाध्याय ने तर्क दिया कि शिक्षा से व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से अलग नहीं होना चाहिए। जैसा कि ठेंगड़ी ने उल्लेख किया है, 'उपाध्याय ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की थी जो ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करेगी जो अपने दृष्टिकोण और कौशल में आधुनिक हों, फिर भी भारतीय सांस्कृतिक लोकाचार में दृढ़ता से जमे हों'।

व्यावहारिक रूप से, यह संतुलन ऐसे पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिसमें आधुनिक विषय और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली दोनों शामिल हों। उदाहरण के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ–साथ छात्र भारतीय दर्शन, शास्त्रीय भाषाएँ और पारंपरिक कला और शिल्प का भी अध्ययन करेंगे।

भारतीय संदर्भ में इस संतुलित दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को कई विद्वानों ने उजागर किया है। राव का तर्क है कि "एक शिक्षा प्रणाली जो भारतीय परंपरा के सर्वश्रेष्ठ को आधुनिक कौशल के साथ जोड़ती है, ऐसे स्नातक तैयार करती है जो न केवल रोजगार योग्य हो बल्कि सामाजिक रूप से जागरूक और सांस्कृतिक रूप से निहित भी हों।

इसके अलावा, पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक कौशल के इस एकीकरण से बेरोजगारी को दूर करने में संभावित लाभ हो सकते हैं जैसा

कि अग्रवाल बताते हैं, कई पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, जब आधुनिक तकनीक के साथ संयुक्त होती है, तो नवाचार और उद्यमिता के लिए अद्वितीय अवसर पैदा कर सकती है।

हालांकि, इस तरह के संतुलित दृष्टिकोण को लागू करना चुनौतियों से खाली नहीं है। सिंह और नाथ अकादमिक कठोरता या वैश्विक प्रतिस्पर्धा से समझौता किए बिना पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के साथ प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक पाठ्यक्रम डिजाइन और शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की शिक्षा की दृष्टि समग्र विकास पर जोर देती है, जिसमें न केवल बौद्धिक विकास बल्कि शारीरिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक आयाम भी शामिल हैं। मानव विकास के लिए यह व्यापक दृष्टिकोण उनके शैक्षिक दर्शन का एक केंद्रीय सिद्धांत है।

जैसा कि माहेश्वरी ने उल्लेख किया है, "उपाध्याय की शिक्षा की अवधारणा केवल साक्षरता या कौशल अधिग्रहण से परे थी; इसमें शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास शामिल था"। यह समग्र दृष्टिकोण प्राचीन भारतीय शैक्षिक परंपराओं से मेल खाता है, जिसमें पूरे व्यक्ति के विकास पर जोर दिया गया था।

उपाध्यायों के दृष्टिकोण में शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य बौद्धिक गतिविधियों के समान ही महत्वपूर्ण थे। उनका मानना था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है और उन्होंने पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा और खेल को शामिल करने की वकालत की। उनके दर्शन का यह पहलू संज्ञानात्मक विकास और समग्र स्वास्थ्य के लिए शारीरिक गतिविधि के लाभों पर समकालीन शोध से मेल खाता है। उपाध्याय की शैक्षिक दृष्टि में भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास की प्रमुखता से शामिल है। उन्होंने तर्क दिया कि शिक्षा में संज्ञानात्मक कौशल के साथ–साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक जागरूकता का पोषण होना चाहिए। यह आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों के साथ मेल खाता है जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को पहचानते हैं।

सामाजिक विकास और नागरिक जिम्मेदारी उपाध्याय के दर्शन में समग्र विकास का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना की जो न केवल कुशल व्यक्तियों का निर्माण करेगी बल्कि सामाजिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध जिम्मेदार नागरिक भी तैयार करेगी। जैसा कि जैफ्रेलॉट ने कहा, "उपाध्याय के शैक्षिक आदर्शों का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो नागरिक कर्तव्य की मजबूत भावना से प्रेरित होकर समाज में सकारात्मक योगदान देंगे"।

बेरोज़गारी समेत समकालीन चुनौतियों से निपटने में इस समग्र दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को कई विद्वानों ने नोट किया है। पांडे का तर्क है कि "उपाध्याय की समग्र शिक्षा की दृष्टि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के कई पहलुओं को विकसित करके तेजी से बदलते नौकरी बाजार में रोज़गार और अनुकूलनशीलता को बढ़ा सकती है"।

इसके अलावा, यह दृष्टिकोण शिक्षा में वैश्विक रुझानों के अनुरूप है जो आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और अनुकूलनशीलता जैसे 21वीं सदी के कौशल के विकास पर जोर देता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय कौशल आधारित शिक्षा के पक्षधर थे। इसे योग्यता आधारित शिक्षा के रूप में भी जाना जाता है। कौशल–आधारित शिक्षा में कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें विशेष उद्योगों के लिए विशिष्ट तकनीकी कौशल, संचार और टीमवर्क जैसे सॉफ्ट कौशल और समस्या–समाधान और आलोचनात्मक सोच जैसे संज्ञानात्मक कौशल शामिल

हैं।कौशल–आधारित शिक्षा में मूल्यांकन में आम तौर पर पारंपरिक ग्रेडिंग प्रणालियों के बजाय विशिष्ट योग्यताओं की महारत का प्रदर्शन करना शामिल है।

हाल के वर्षों में कौशल आधारित शिक्षा ने वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है, जो तेजी से तकनीकी प्रगति, श्रम बाजार की बदलती मांगों और विभिन्न उद्योगों में कौशल अंतराल को संबोधित करने की आवश्यकता से प्रेरित है। यह खंड कौशल–आधारित शिक्षा में प्रमुख वैश्विक रुझानों की खोज करता है, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से अभिनव दृष्टिकोण और सर्वोत्तम प्रथाओं पर प्रकाश डालता है।

एक प्रमुख प्रवृत्ति कौशल आधारित शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों का बढ़ता एकीकरण है। जैसा कि ब्राउन एट अल. ने उल्लेख किया है, "डिजिटल प्लेटफार्म और ऑनलाइन शिक्षण उपकरणों के उदय ने कौशल–आधारित शिक्षा के वितरण में क्रांति ला दी है, जिससे यह व्यक्तिगत शिक्षार्थी की ज़रूरतों के हिसाब से अधिक सुलभ और अनुकूल हो गया है। मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स और अन्य ई–लर्निंग प्लेटफार्म वैश्विक दर्शकों को कौशल केंद्रित सामग्री प्रदान करने के लिए लोकप्रिय माध्यम के रूप में उभरे हैं।

एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति भविष्य के कौशल या 21वीं सदी के कौशल पर बढ़ता जोर है। विश्व आर्थिक मंच जटिल समस्या–समाधान, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे कौशल को भविष्य की कार्यबल तत्परता के लिए महत्वपूर्ण मानता है। दुनिया भर में शैक्षिक प्रणालियाँ इन कौशलों को अपने पाठ्यक्रम में तेजी से शामिल कर रही है, अक्सर परियोजना आधारित और अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोणों के माध्यम से।

माइक्रो–क्रेडेशियल या नैनो–डिग्री की अवधारणा ने भी कौशल–आधारित शिक्षा में प्रमुखता प्राप्त की है। ये छोटे केन्द्रित कार्यक्रम विशिष्ट कौशल या दक्षताओं में प्रमाणन प्रदान करते हैं, अक्सर उद्योग के नेताओं के साझ साझेदारी में। जैसा कि काटो एट अल ने देखा, "माइक्रो–क्रेडेंशियल कौशल विकास के लिए एक लचीला और लक्षित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जिससे शिक्षार्थियों को नियोक्ताओं द्वारा मूल्यवान विशिष्ट दक्षताओं को जल्दी से हासिल करने और प्रदर्शित करने की अनुमति मिलती है"।

उद्योग–शिक्षा साझेदारी वैश्विक स्तर पर कौशल–आधारित शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता बन गई है। कई देश शैक्षणिक संस्थानों और व्यवसायों के बीच घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि यह सुनिश्चित कया जा सके कि पाठ्यक्रम उद्योग की जरूरतों के अनुरूप हों। उदाहरण के लिए जर्मनी की दोहरी शिक्षा प्रणाली, जो कक्षा में सीखने को नौकरी पर प्रशिक्षण के साथ जोड़ती है को कौशल आधारित शिक्षा के लिए एक सफल मॉडल के रूप में व्यापक रूप से मान्यता दी गई है।

आजीवन सीखने की अवधारणा ने भी गति पकड़ी है, यह मानते हुए कि कौशल विकास एक व्यक्ति के पूरे कैरियर में एक सतत प्रक्रिया है। जैसा कि लाल और सलामती ने उल्लेख किया है, कौशल आधारित शिक्षा में आजीवन सीखने के दृष्टिकोण तेजी से बदलते नौकरी बाजार में निरंतर अपस्किलिंग और रीस्किलिंग की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं।

कई देशों में कौशल आधारित शिक्षा के हिस्से के रूप में उद्यमिता शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। यह प्रवृत्ति मानती है कि उद्यमशीलता कौशल न केवल व्यवसाय शुरू करने वालों के लिए बल्कि स्थापित संगठनों के कर्मचारियों के लिए भी मूल्यवान है। जैसा कि लैकेयस बाते हैं, "उद्यमिता शिक्षा नवाचार, रचनात्मक और समस्या–समाधान कौशल को

बढ़ावा दे सकती है जो विभिन्न कैरियर पंथों में मूल्यवान है"।

अंत में तकनीकी दक्षताओं के साथ–साथ सॉफ्ट स्किल्स या मानवीय कौशल पर भी जोर दिया जा रहा है। शिक्षा और कौशल के भविष्य पर OECD-2019 की रिपोर्ट 21वीं सदी के कार्यस्थल में सफलता के लिए संज्ञानात्मक और तकनीकी कौशल के पूरक के रूप में सामाजिक और भावनात्मक कौशल के महत्व पर प्रकाश डालती है।

कौशल–आधारित शिक्षा में ये वैश्विक रुझान अधिक लचीले, उद्योग–सरेखित और प्रौद्योगिकी–संवर्धित शिक्षण मॉडल की ओर बदलाव को दर्शाते हैं। जबकि विभिन्न संदर्भों में कार्यान्वयन अलग–अलग होता है, ये रुझान केंद्रित कौशल विकास के माध्यम से शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता की बढ़ती मान्यता को उजागर करते हैं।

व्यावसायकि शिक्षा और प्रशिक्षण (VET) प्रणालियाँ कौशल–आधारित शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो विशिष्ट व्यवसायों या ट्रेड़ों के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। इन प्रणालियों को शिक्षार्थियों को कार्यस्थल पर सीधे लागू होने वाले व्यावहारिक कौशल और ज्ञान प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो अक्सर कक्षा निर्देश को व्यावहारिक अनुभव के साथ जोड़ते हैं।

सेडेफॉप के अनुसार – वीईटी का अर्थ है "शिक्षा और प्रशिक्षण जिसका उद्देश्य लोगों को विशेष व्यवसायों या अधिक व्यापक रूप से श्रम बाजार में आवश्यक ज्ञान, जानकारी, कौशल और/या योग्यता से लैस करना है"। यह परिभाषा वीईटी के व्यावसायिक फोकस और श्रम बाजार की जरूरतों के लिए इसकी प्रत्यक्ष प्रासंगिकता पर प्रकाश डालती है।

VET प्रणालियाँ विभिन्न देशों में काफी भिन्न होती हैं, जो विभिन्न ऐतिहासिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों को दर्शाती है। हालांकि, कुछ सामान्य तत्वों की पहचान की जा सकती है। जैसा कि पिल्ज़ ने उल्लेख किया है, अधिकांश VET प्रणालियों में किसी न किसी रूप में कार्य आधारित शिक्षा शामिल होती है, चाहे वह प्रशिक्षुता, इंटर्नशिप या नकली कार्य वातावरण के माध्यम से हो। सीखने और काम के इस एकीकरण को नौकरी के लिए तैयार कौशल विकसित करने की कुंजी के रूप में देखा जाता है।

जर्मन दोहरी प्रणाली को अक्सर वीईटी के सफल मॉडल के रूप में उद्धृत किया जाता है। जैसा कि रेमिंगटन द्वारा वर्णित किया गया है, यह प्रणाली अंशकालिक व्यावसायिक स्कूली शिक्षा को अंशकालिक ऑन–द–जॉब प्रशिक्षण के साथ जोड़ती है, जिससे छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल दोनों प्राप्त करने की अनुमति मिलती है। इस मॉडल की सफलता ने कई देशोंको जर्मन दृष्टिकोण के तत्वों को अपनाने या अनुकूलित करने के लिए प्रेरित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. माहेश्वरी, एस.आर, 1972, भारत में राजनीतिक विकास, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी
2. पांडे, एस.के., 2020, दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद : समकालीन भारत में प्रासंगिकता, इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 81(2) पृ. सं. 311–322
3. उपाध्याय, डी, 1995, एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ
4. घोष, एस.सी., 2015, आधुनिक भारत में शिक्षा का इतिहास : 1757–2012, ओरिएंट ब्लैकस्वान
5. राव. डी.बी., 2018, भारत में शिक्षा, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस

6. ठेंगडी, डी., 1988, पंडित दीनदयाल उपाध्याय : विचारधारा और धारणा। सुरुचि प्रकाशन।
7. जैफ्रेलोट, सी., 2007 हिंदू राष्ट्रवाद : एक पाठक प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस
8. पांडे, एस.के., 2020, दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद : समकालीन भारत में प्रासंगिकता, इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 81(2) पृ. 311–312
9. सिंह, ए., और शिवरामकृष्णन, एम., 2019, शारीरिक गतिविधि और शैक्षणिक प्रदर्शन : भारत से साक्ष्य, जर्नल ऑफ स्पोर्ट एंड हेल्थ साइंस, 8(5) पृ. सं. 468–476
10. गेरवाइस, जे., 2016, योग्यता–आधारित शिक्षा की परिचालन परिभाषा, जर्नल ऑफ कॉम्पिटेंसी, बेस्ड एजुकेशन, 1(2), 98–106